बंधस्वामित्व कर्मग्रंथ सह पद्यानुवाद

सर्वोदय ग्रंथावली ६४७

संयोजक - प.पू. श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म. सा.

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टनी विविध प्रवृतिओनी झलक

- श्री गृहमंदिरनी योजना
- श्री जिन प्रतिमाजीनी अष्ट मंगल पाटली योजना
- श्री गुरुमूर्तिओनुं निर्माण
- श्री ताम्रयंत्रोनी संकलना
- श्री आगम साहित्य
- श्री अर्वाचीन साहित्य
- श्री प्राचीन साहित्यनुं पांच-छ भाषामां संकलन
- श्री मल्टीकलर साहित्य
- पू. आ. श्री गुणसागरसूरि ज्ञानसंस्कार शिबिरनुं आयोजन
- गुरुगुण गीत गंगा केसेटोनुं आयोजन

पुस्तक प्राप्ति स्थान

विराग-तेजस-ऋजु गंगर
रमेश अपार्टमेन्ट, अहिल्या बाग सामे, थाणा

श्री सोमचंद भाणजी लालका
मुंबई गली, पो.-अमलनेर,
जि.-जलगाम, महाराष्ट्र-४२५४०१

मनोज जैन
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर, ३८२००७

सर्वोदय ग्रंथावली

सामायिकमां स्वाध्याय - गुणश्रेणी - ४७

श्री देवेंद्रसूरिकृत

बंधस्वामित्त्व कर्मग्रंथ मूळ साथे गुर्जर पद्यानुवाद

पद्यानुवादक

पूज्य श्रुतोपासक मुनिराज श्री सर्वोदयसागरजी म. सा.

प्रकाशक

श्री चारित्ररत्न फ़ा. चे. ट्रस्ट

सौजन्य :- श्री जैन श्वे. मू. पू. संघ ज्ञानखाता - सेंधवा (म.प्र.)

वीर सं. २५३५, वि. सं. २०६५, आर्य संवत ८२९, गुणसंवत - २१

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

।।श्री महावीराय नमः।।।। श्री सर्वोदय पार्श्वनाथाय नमः।।।। श्री गौतमस्वामिने नमः।।

अचलगच्छेश जंगमयुगप्रधान आ. श्री आर्यरक्षित जयसिंह महेन्द्रप्रभ मेरुतुंग धर्ममूर्ति कल्याण गौतम गुणसागरसूरिभ्यो नमः।।

दिव्य कृपा

कलिकाल कल्पतरु जंगमयुगप्रधान अचलगच्छेश प.पू. आ.भ.श्री गौतम - नीति - गुणसागरसूरीश्वरजी म. सा.

शुभ आशीर्वाद

अचलगच्छाधिपति प.पू. आ.भ.श्री गुणोदयसागरसूरीश्वरजी म. सा.

प.पू. युवाचार्य श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा.

पू. गणिवर्यो, पू. मुनिवर्यो आदि

प्रेरणादाता

प.पू. तपस्वी मुनिराज श्री चारित्ररत्नसागरजी म.सा.

शुभेच्छुक

प.पू. मुनि श्री जगवल्लभ-गुणवल्लभसागरजी म.सा. आदि ठाणा - ५०

मार्गदर्शक

प.पू. मुनिराज श्री उदयरत्नसागरजी म.सा.

संपादक

मनोज आर. जैन - कोबा

मूल्य २५ रु. ।। उदयो भवतु सर्वेषाम्।। वि. सं. २०६५, प्रथमावृत्ति

प्रास्ताविकम्

आचार्य श्री देवेन्द्रसूरिजी द्वारा विरचित बंधस्वामित्व नामना आ त्रीजा नव्य कर्मग्रंथमां २५ गाथाओ छे. तेमां १२० प्रकृति मांहेथी केटली प्रकृतिना बंधनो स्वामी कयो कयो जीव छे तेनुं वर्णन करवामां आव्युं छे. गति विगेरे बासठ मार्गणास्थानकोने विषे संक्षेपथी जीवने बंधनुं स्वामीपणुं एटले पोताने योग्य दरेक गुणठाणे कयो जीव केटकेटली कर्मप्रकृति बांधे एनुं विवेचन करवामां आव्युं छे.

अनादिकाळथी आत्माने थयेला कर्मसंयोगनो हरकोई शुद्ध योगे तेनो वियोग करवो अने पोतानुं शुद्ध स्वरूप प्रकट करवुं एज दरेक भव्यात्मानुं अंतिम लक्ष्य होय छे. आत्मस्वरूप प्रगटाववाना अनेक साधनो पैकी हेयोपादेयनुं भान करावी आत्मिक दृष्टि उघाडनारा पूर्वाचार्योए रचेला ग्रंथो आराधनाना मार्गे विचरता साधक आत्माओ पर घणो उपकार करे छे.

पूज्य मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म. सा. ता. २१-१२-०५ थी ता. २३-०४-०६ सुधी श्री वीरचंद सोनी परिवारना तलासरीना N. N. सन्स पेट्रोलपंचना निवास स्थाने रह्या हता. पूज्यश्री साथे पूज्य मुनिराज श्री गुणवल्लभसागरजी म.सा. हता. चार

महिनानी स्थिरता दरम्यान पूज्य गुणवल्लभसागरजीए १५०० गाथाओ कंठस्थ करी हती ज्यारे पूज्य श्रुतोपासक विद्वान् मुनिराज श्री सर्वोदयसागरजीए २० नूतन रचनाओ करी हती तेमांथी त्रणभाष्य, छ कर्मग्रंथनी मळी नव रचनाओ आ प्रकाशन श्रेणीमां आपवामां आवी छे. प्रस्तुत पुस्तिकामां अमे पूज्य मुनिश्री द्वारा रचित गुर्जरभाषाबद्ध बंधस्वामित्व तृतीय कर्मग्रंथनो पद्यानुवाद प्रारंभमां आप्यो छे अने पछी तृतीय कर्मग्रंथ मूळ आपेल छे जेथी वाचक-मुमुक्षुओ गाथाओनो स्वाध्याय अने अर्थनी अवधारणा बन्ने साथे करी शकशे. वधु ऊंडाणपूर्वक अभ्यास करवा मांगता जिज्ञासुओ माटे आ पुस्तिकाना प्रान्ते तृतीयकर्मग्रंथने लगता प्राप्तसाहित्यनी टीप आपवामां आवेल छे.

परम पूज्य श्रुतोपासक विद्वान् मुनिप्रवर श्री सर्वोदयसागरजी महाराजश्रीना सत्प्रयास अने प्रेरणाथी आ रीते जीवविचार आदि चार प्रकरणो, त्रणभाष्यो अने छ कर्मग्रंथोनो मूळ साथे पद्यानुवाद सर्वप्रथमवार छपाई रह्यो छे. अने ते ज्ञानपिपासुओ माटे आशीर्वाद रूप सिद्ध थशे. पूज्य मुनिराज श्री उदयरत्नसागरजी म. सा. ए आ कार्यमां सुंदर मार्गदर्शन करेल छे. आ पद्यानुवादने अक्षरशः निरीक्षण करी आपवा बदल पं. श्री चन्द्रकान्तभाई एस. संघवी-

पाटणनो तेमज दरेक प्रकरणोना साहित्यनी नोंध आपवा बदल आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर-कोबा तथा पं. जितेन्द्र बी. शाहनो (एल.डी. इन्डोलोजी-अमदावाद) अन्तःकरणपूर्वक आभार व्यक्त करीए छीए.

प्रकाशन संस्था श्री चारित्ररत्नफा.चे.ट्रस्टे प्रभु महावीरना २५३५मा निर्वाण महोत्सवना उपलक्षमां २५३५ ग्रंथो प्रकाशित करवानो महान संकल्प कर्यो छे. ए संदर्भमां ५०० जेटला ग्रंथो प्रकाशित थई चूक्या छे. तेनो अमने खूबज हर्ष छे. जेमां ५०० पूजन प्रतो पैकी २०० प्रतो प्रकाशित थई गई छे, ५०० अप्रगट ग्रंथो पैकी ५० ग्रंथो प्रेसमां छे, १३५ कथा ग्रंथो छ भाषामा अने ५ भाषामां प्रकाशित थया छे जे साधु-साध्वीजीओने भणवा माटे खूबज उपयोगी छे, ४५ आगम सचित्र गुजराती, हिंदी अने अंग्रेजी भावार्थ साथे प्रकाशित थयेल छे, ३०० रास वि. मर्यादित नकलो प्रकाशित करी छे, अचलगच्छनी १०० पूजाओ पैकी ५० प्रकाशित करी छे, १०० ढालिया, १५० अचलगच्छीय आर्चार्योना संस्कृत चरित्रो, १०८ करमशी खेतशी खोनानुं अप्रगट साहित्य, १५० श्री पार्श्वभाईनुं अप्रगट साहित्य, ५१ गुणमंजूषा प्रकाशित थयेल छे. ५१ स्तोत्रो खंडान्वय-दंडान्वय अने पदच्छेद युक्त प्रकाशन थई रह्या छे जेमां २१ स्तोत्रो प्रेसमां छे. तदुपरांत १२०

सामायिकमां स्वाध्याय पुस्तिकाओ, २२५ विविध ग्रंथो आम कुल मळीने २५३५ ग्रंथो थाय छे. हमणासुधी आ कार्य धीमी गतिए चालतुं हतुं ते हवे देव-गुरु पसाये वेगवंतु चालशे एवी आशा छे.

ट्रस्टना निर्णयो

१. हवे पछी बधा ग्रंथो मल्टी कलरमां छपाशे.

२. ग्रंथो माटे दाननी अपील बहार पडशे नहि.

३. अध्ययनमां उपयोगी माहिती अलभ्य बने तो पोस्टल खर्च तथा झेरोक्ष खर्च लईने व्यवस्था करी आपवी.

४. प्रकाशित ग्रंथो कोईने पण भेटमां आपवा नहि.

५. वि.सं २०६७ पछी योग्य समये ट्रस्टनुं विसर्जन करी देवाशे.

अन्ते वाचक वर्गने नम्र विनंति करीए छीए के प्रमादवश आ प्रकाशनमां कोई प्रकारे त्रुटीओ रही गई होय तो सूचित करशो जेथी पुनरावृत्तिमां सुधारो वधारो करी शकीशुं.

- लि. श्री चारित्ररत्न फा.. चे. ट्रस्टवती

श्री सोमचंद भाणजी लालका

श्री जेन्तीलाल जेठाभाई मैशेरीना

सादर जयजिनेंद्र

बंधस्वामित्व कर्मग्रन्थनो पद्यानुवाद

मंगलाचरण

नमुं वीरने गोयम गुरु जेवा गुणसूरिने वंदन करुं
देवेन्द्रसूरि रचित कर्म बंधने गुर्जर पद्ये रचुं
गति आदि मार्गणाओने कर्मग्रन्थमां कहेवाय छे
त्रीजो कर्मग्रन्थ बंधस्वामित्व ए नामथी ओळखाय छे १

६२ मार्गणा

गति इंद्रिय काय योग वेद कषाय ज्ञान संयम दर्शन
लेश्या भव्य सम्यक्त्व सन्नी आहारी मार्गणा ए चौद घन
चार पांच छ त्रण त्रण चार आठ चार छ बे भेद छे
(सम्यक्त्वना छ सन्नीना बे आहारी मार्गणा बे)
छे बे बे चौद मार्गणाना जुओ कुल बासठ भेद छे २
जिननाम देवद्विक वैक्रियद्विक आहारकद्विक देवायुष्य
नरकत्रिक अने सूक्ष्मत्रिक विकलत्रिक एकेन्द्रिय स्थावरस्य
आतप नपुंसक वेद मिथ्यात्व हुंडकने छेवठ्ठु संघयण
अनंतानुबंधि संघयण संस्थान मध्यम चार चार गण ३

अशुभ विहायोगति स्त्रीवेद नीच गोत्रने दुर्भग थिणद्धि त्रिक
उद्योत अने तिर्यंच द्विक तिर्यंच आयुष्य मनुष्य द्विक
मनुष्यायुष्य औदारिक द्विक वज्रऋषभ छे संघयण
कुल पंचावन प्रकृतिओमां (विभासा) संज्ञाओ प्राप्त गण ४
प्रथम त्रण नरक ओघमां एकसो एक प्रकृति होय छे
एकसो वीसमांथी देवगति ओगणीस प्रकृति वर्जाय छे
जिननाम कर्म विना मिथ्यात्वे बंधमां सो प्रकृति होय छे
बीजा गुणे नपुंसक चतुष्क विना छन्नु प्रकृति होय छे ५
अनंतानुबंधी छव्वीस विना त्रीजा गुणे सित्तेर बंध छे
जिन नाम नरायु उमेरता चोथा गुणे बोतेर बंध छे
जिन नाम विना पंकादि त्रण एकोतेर प्रकृति बंधाय छे
पंकादि त्रणमां ओघे प्रकृति एकसो बाकी सरखी थाय छे ६
सातमी नारके ओघमा नव्वाणु प्रकृति बंधाय छे
मिथ्यात्वे छन्नु बंधायने सास्वादने एकाणुं होय छे
जिन नाम मनुष्यायु न ओघे न उच्च गोत्र मनुष्यद्विक
बीज़े न नपुंसक चतुष्क अने तिर्यंच आयुष्य त्रिक ७
मिश्र अविरति गुणठाणे सित्तेर प्रकृतिओ होय छे

अनन्तानुबंधि चोविश विना मनुष्य द्विक उच्च गोत्र होय छे
पर्याप्ता तिर्यंच हवे जाणो ओघे मिथ्यात्वे एकसो सत्तर छे
आहारक द्विक न होय जिन नामनो पण कटर छे ८
नरकादि सोळनो अंत थाता एकसो एक प्रकृति बंधाय
अनंतानुबंधी एकत्रीश जाता ओगणसित्तेर मिश्रे बंधाय
देवायुष्य चोथे आवता अविरते सित्तेर बंधाय
अप्रत्याख्यानीय कषाय जाता पांचमे छासठ प्रकृति बंधाय ९
मनुष्योने पंचेन्द्रि तिर्यंच चार गुणस्थाने बंध जाणो
जिन नामथी चोथे एकोतेर पांचमेथी कर्मस्तव जाणो
अपर्याप्ता तिर्यंच नरने एकसो नव प्रकृति बंधाय
जिन आदि अग्यार विना एमने एक गुणस्थानक थाय १०
नारकीनी जेम देवताने जाणो ओघे मिथ्यात्वे भिन्नता छे
एकेन्द्रिय त्रिक तेमां उमेरो ओघे एकसो चार थाय छे
भवनपति व्यंतर ज्योतिषी जिननाम रहित बंध छे
ओघे एकसो त्रण प्रकृति आ देवताओमां बंधाय छे ११
त्रीजाथी आठमां देवलोके एकसो एक प्रकृति ओघे छे
आनतादि नव ग्रैवेयके उद्योत चारे विना अट्ठाणुं छे

पांच अनुत्तरे चोथुं ज गुण बौतेर बंधमां होय छे
एकेन्द्रियादि सात मार्गणे ओघे एकसो नव होय छे १२
एकेन्द्रियने विकलेन्द्रिय पृथ्वी अप् वन. सात मार्गणा
सास्वादनना गुणस्थानके सूक्ष्म तेर विना छन्नु बंधमां
केटलाक आचार्यो बंधमां चोराणुं प्रकृतिओ माने छे
सास्वादने काळ छ आवलिका बे आयु विना प्रकृति माने छे १३
पंचेन्द्रिय त्रसकाय मार्गणा मनोयोगने वचनयोगमां
औदारिक काययोगमां ओघे एकसो वीस बंधमां
तेउ वाउना ओघे मिथ्यात्वे एकसो पांचनुं बंध थाय छे
तेउ वाउना जीवो मरीने फक्त तिर्यंचगतिमां जाय छे १४
औदारिक मिश्र काययोगे एकसो चौद प्रकृति बंधाय छे
आहारक छ जिन पांच विना मिथ्यात्वे एकसो नव थाय छे
नर तिरि आयु सूक्ष्मादि तेर विना सास्वादने चोराणुं छे
अनंतानु चोवीश चोथे सित्तेर तेरमे एक शाता बंध छे १५
चोथे जिन पांच मेळवता मनुष्य गति पंचक जाता
हवे कार्मण काययोगमां एकसो बार प्रकृति थाता
बाकी औदारिक मिश्र जेम कार्मण काययोग जाणजो

आहारक काय - मिश्र तेम कर्मस्तव प्रमाणे जाणजो १६
प्रकृति वैक्रिय काययोगमां एकसो चार बंध थाय छे
वैक्रिय मिश्र काययोगमां एकसो बेनो बंध थाय छे
त्रण वेदमां नव गुण छे एकसो बे प्रकृति छे
अनंतानुबंधि कषायमां ओघे मिथ्यात्वे एकसो सत्तर छे १७
अप्रत्या ने प्रत्याख्यानीयमां ओघे एकसो अढार होय छे
गुणस्थानको अनंते बे अप्रत्या चार प्रत्या पांच छे
संज्वलन त्रणेमां नव गुण लोभे दश अविरति चार
अज्ञान त्रिके बे के त्रण चक्षु अचक्षुए एकथी बार १८
यथाख्यात चारित्रे चार गुण अग्यारथी चौद ए जाणजो
तेर सुधी शाता वेदनीय चौदमां सबंधक जाणजो
सात मनःपर्वीने छ थी बार चार छेद विरतिए छ थी नव
बे परिहारविशुद्धिए गुणस्थानके बे छ ने सात १९
केवलज्ञान केवलदर्शने तेर चौद गुण बे होय छे
मति श्रुत अवधिने दर्शन चारथी बार नव जोय छे
उपशम समकिते आठ गुण चार क्षयोपशमे चारथी सात
दश क्षायिके चारथी चौद आहारके फक्त चौदनो घात २०-२१

उपशमे आयु बंध न थाय देव आयु न बंधाय पांच-छ
प्रथम त्रण लेश्याए ओघमां एकसो अढार-एकसो सतर २२
प्रथमे सास्वादनथी जाणो बीजा कर्मग्रंथ वखाणो
तेजो लेश्या एकसो अग्यार शुक्ललेश्या बंध एकसो चार जाणो २३
पद्म लेश्या एकसोने आठ एकथी सात गुण होय छे
भव्य तथा सन्नी मार्गणे चौद गुणस्थानको होय छे
अभव्यने एक असन्नीने बे अणहारी कार्मणा काये जाणो
दरेक मार्गणा गुणस्थानके ओघ मुजब बंधने जाणो २४
पहेली त्रण लेश्यामां चार तेजो पद्ममां सात गुण छे
शुक्लमां तेर गुणस्थानक छे एम देवेन्द्रसूरि कहे छे २५
तलासरीमां मल्लि पसाए एन. एन. सन्से अर्चना
अंचलगच्छमां सर्वोदयथी प्रथम थई छे रचना

इति बंधस्वामित्व कर्मग्रंथ पद्यानुवाद संपूर्ण

बंधस्वामित्व कर्मग्रंथ मूल

बंधविहाणविमुक्कं, वंदिय सिरिवद्धमाणजिणचंदं;
गइआइसुं वुच्छं, समासओ बंधसामित्तं. १

गइ इंदिए य काए, जोए वेए कसाय नाणे य;
संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे. २

जिण सुरविउवाहारदु, देवाउ य निरय सुहुम विगलतिगं;
एगिंदि थावराऽऽयव, नपु मिच्छं हुंड छेवट्ठं. ३

अणमज्झागिइसंघयण, कुखगइनियइत्थि दुहगथीणतिगं;
उज्जोअ तिरिदुगंतिरि-नराउ नरउरलदुग रिसहं. ४

सुरइगुणवीसवज्जं, इगसउ ओहेण बंधहि निरया;
तित्थविणामिच्छिसयं, सासणि नपुचउ विणा छनुइ. ५

विणुअण छवीस मीसे, बिसयरि सम्मंमि जिणनराउ जुआ;
इअ रयणाइसु भंगो, पंकाइसु तित्थयरहीणो. ६

अजिणमणुआउ ओहे, सत्तमीए नरदुगुच्चविणु मिच्छे;
इगनवई सासाणे, तिरिआउ नपुंसचउ वज्जं. ७

अणचउवीसविरहिआ, सनरदुगुच्चा य सयरि मीसदुगे;
सतरसओ ओहि मिच्छे, पज्जतिरिया विणु जिणाहारं. ८
विणु निरयसोल सासणि, सुराउ अणएगतीस विणु मीसे;
ससुराउ सयरि सम्मे, बीअकसाए विणा देसे. ९
इय चउगुणेसु वि नरा, परमजया सजिण ओहु देसाई;
जिणइक्कारसहीणं, नवसय अपज्जत्ततिरिअनरा. १०
निरयव्व सुरा नवरं, ओहे मिच्छे इगिंदितिगसहिआ;
कप्पदुगे वि य एवं, जिणहीणो जोइभवणवणे. ११
रयणुव्वसणंकुमाराई, आणयाई उज्जोयचउरहिआ;
अपज्जतिरिअव्व नवसय, मिगिंदिपुढविजलतरुविगले. १२
छन्नवई सासणि-विणु सुहुमतेर, केई पुण बिंतिचउनवइं;
तिरिअनराऊहिं विणा, तणुपज्जत्तिं न जंति जओ. १३
ओहु पणिंदितसे, गइतसे जिणिक्कारनरतिगुच्च विणा;
मणवयजोगे ओहो, उरले नरभंगु तम्मिस्से. १४
आहारछग विणोहे चउदससउ मिच्छि जिणपणगहीणं;
सासणि चउनवई विणा तिरिअनराऊ सुहुमतेर. १५

अणचउवीसाइ विणा, जिणपणजुअ सम्मि जोगिणो सायं;
विणु तिरिनराउ कम्मे-वि, एवमाहारदुगि ओहो. १६
सुरओहो वेउव्वे, तिरिअनराउ रहिओ अ तम्मिस्से;
वेअतिगाइम बिअतिअ, कसाय नव दु चउ पंचगुणा. १७
संजलणतिगे नव दस, लोभे चउ अजइ दु ति अनाणतिगे;
बारस अचक्खुचक्खुसु, पढमा अहक्खाय चरिमचउ. १८
मणनाणि सग जयाइ, समइअच्छेअ चउ दुन्नि परिहारे;
केवलदुगि दो चरमा, जयाइ नव मइसु ओहिदुगे. १९
अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिच्छतिगि देसे;
सुहुमि सठाणं तेरस, आहारगि निअनिअगुणोहो. २०
परमुवसंमि वट्टंता, आउं न बंधंति तेण अजयगुणे;
देवमणुआउहीणो, देसाइसु पुण सुराउ विणा. २१
ओहे अट्ठारसयं, आहारदुगुणमाइलेसतिगे;
तं तित्थोणं मिच्छे, साणाइसु सव्वहिं ओहो. २२
तेऊ निरयनवूणा, उज्जोअचउनिरयबार विणु सुक्का;
विणु निरयबार पम्हा, अजिणाहारा इमा मिच्छे. २३

सव्वगुण भव्वसन्निसु, ओहु अभव्वा असन्निमिच्छिसमा;
सासणि असन्नि सन्निव्व, कम्मणभंगो अणाहारे. २४
तिसु दुसु सुक्काइगुणा, चउ सग तेरत्ति बंधसामित्तं;
देविंदसूरि रइअं, नेअं कम्मत्थयं सोउं. २५

इति बंधस्वामित्व कर्मग्रंथ संपूर्ण

बंधस्वामित्व अंगेनी कृतिओनी सूचि

कर्ता नाम **कृति नाम**

बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ ....दवेंद्रसूरि
बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)टीका ....अज्ञात जैनश्रमण
बधस्वामित्त नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)अवचूरि ......अज्ञात जैनश्रमण
बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)अवचूर्णि ......अज्ञात जैनाचार्य
बधस्वामित्व-(सं.)अवचूर्णि ....जयसोम
बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)अवचूर्णि ....गणरत्नसूरि
बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)टिप्पण ...अज्ञात जैनश्रमण
बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)टिप्पण ....अज्ञात जैनश्रमण
बधस्वामित्व-(गु.)विवेचन ....जोवविजय
बधस्वामित्व नव्य-(गु.)विवेचन ...धोरजलाल डाह्यालाल महेता
बधस्वामित्व नव्य-(गु.)विवेचन ....हर्षगुणाश्रीजी
बधस्वामित्व नव्य-(गु.)विवेचन ....भगवानदास हर्षचंद
बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(गु.)विवेचन .... वोरशेखरसूरि
बधस्वामित्व-(हिं.)विवेचन ....मिश्रीमलजी मधुकर

बंधस्वामित्व कर्मग्रंथ अंगेनी कृतिओनी सूचि

बधस्वामित्व-(हिं.)भावार्थ .... सखलालजी संघवी

बंधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(गु.)गाथार्थ . परेशकुमार जसवंतलाल शाह

बधस्वामित्व-(सं.)छाया ....भगवानदास हर्षचंद

बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(गु.)विवेचन ....नरवाहनसूरि

बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)बालावबोध ...... कांतिविजय

बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)बालावबोध ....जयसोम

बधस्वामित्व नव्य-(मा.गु.)बालावबोध ....पण्यकलश

बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)बालावबोध .... मतिचंद्र

बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)टबार्थ .... जोवविजय

बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)टबार्थ .... धनविजय

बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(प्रा.)यंत्र ....समतिवर्द्धन

बधस्वामित्व नव्य-(गु.)प्रश्नोत्तरी विवरण ....नरवाहनसूरि

बंधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(गु.)विवेचन ..रसिकलाल शांतिलाल महेता

बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)टबार्थ .... कांतिसागर

बधस्वामित्व नव्य कर्मग्रंथ-(गु.)टिप्पण . भाई कुंवरजी मूलचंद

नोंधपोथी

नोंधपोथी

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टना प्रकाशनो

- 500 पूजनप्रतो
- 135 6 भाषाना कथाग्रन्थो (अप्राप्य)
- 350 अप्रगट ग्रन्थो हस्तप्रतोमांथी लखाई गया छे
- 45 आगमग्रन्थो (अप्राप्य)
- 120 सामयिकमां स्वाध्याय काव्यकृतिओ (क्रमसर छपाय छे)
- 25 अचलगच्छेश पू. आ. कल्याणसागरसूरि तथा पू. आ. विद्यासागरसूरि रचित स्तोत्र आधारे खंडान्वय-दंडान्वय
- 75 पू. अचलगच्छेश तथा आचार्य भ., साधु भगवंतना संस्कृतमां जीवनचरित्रो

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्ट तरफथी २५०० ग्रन्थो प्रकाशित करवानी भावना छे. हाल १२५० ग्रन्थोनी झलक आपी छे. लेखक 'श्री पार्श्व' नुं साहित्य क्रमसर प्रकाशित करवानी भावना छे.

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

Printed by. Navprabhat 98255 98855

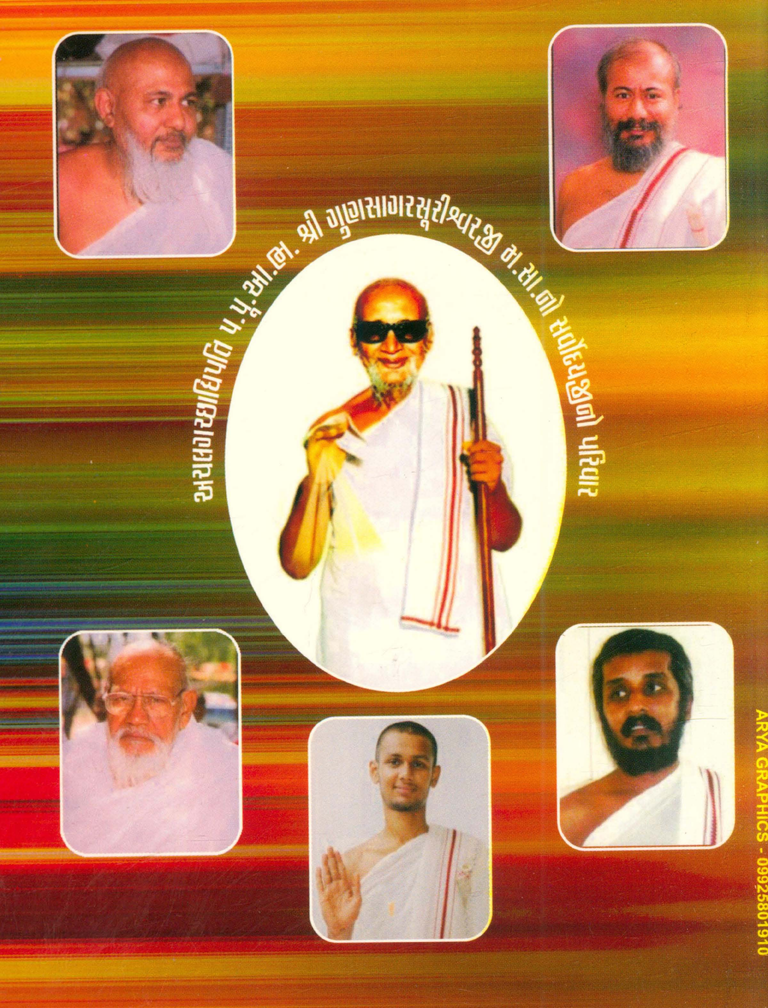
અચલગચ્છાધિપતિ પ.પૂ.આ.ભ. શ્રી ગુણસાગરસૂરીશ્વરજી મ.સા.નો સર્વોદયજીનો પરિવાર
ARYA GRAPHICS - 09925801910